आज का छात्र
और
हमारा कार्य

अभाविप के 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन – पटना में

प्रा.मिलिंद मराठे (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष) **द्वारा दिया गया भाषण**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

03, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग, माटुंगा रोड (प.रे) स्टेशन के सामने,
माहिम, मुंबई.-400016 दूरभाष:022–24306321,फैक्स :022– 24313938
Email : info@abvp.org, Website : www.abvp.org

आज का छात्र और हमारा कार्य

अभाविप के 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन – पटना में
प्रा.मिलिंद मराठे (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष) द्वारा दिया गया भाषण

© : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

प्रथम संस्करण : मई, 2013

प्रतियाँ : 5000

प्रकाशक : सी.एम.धाकड़
केन्द्रीय कार्यालय मंत्री

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
03, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग,
माटुंगा रोड (प.रे) स्टेशन के सामने,
माहिम, मुंबई – 400016

दूरभाष : 022 – 24306321
फैक्स : 022 – 24313938
Email : info@abvp.org,
Website : www.abvp.org

मुद्रक : रचना मुद्रण, दादर, मुंबई-14, फोन : 4124414

सहयोग राशि : 10.00 रुपये

निवेदन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. मिलिंद मराठे द्वारा अभाविप के 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन, पटना में दिये गये भाषण **"आज का छात्र और हमारा कार्य"** पुस्तक के रूप में हम प्रकाशित कर रहे है। अभाविप के 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन में दिनांक 27 दिसंबर 2012 को इस विषय की प्रस्तुति हुई थी।

वैश्वीकरण के दौर के बाद समाज में जो मूलगामी बदलाव हुए है उसका शिक्षा क्षेत्र पर क्या असर हुआ और ऐसी स्थिति में अभाविप कार्य की दिशा क्या हो, इस विषय पर छपी यह पुस्तक हम सभी को उपयोगी सिद्ध होगी।

दिनांक : 29 मई, 2013
प्रा. मुरली मनोहर
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अभाविप

आज का छात्र और हमारा कार्य

प्रा.मिलिंद मराठे (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष) द्वारा दिया गया भाषण

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के मा.राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. मुरलीमनोहर जी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री उमेश दत्त जी, यहाँ पर उपस्थित कार्यकर्ता भाईयों एवं बहनों, इस सत्र में ही **"अभाविप कार्य - कल, आज और कल"** इस पुस्तक का हमने विमोचन किया है, विद्यार्थी परिषद के काम के शिल्पी के रुप में जिन्होंने अपना सारा जीवन इस संगठन के लिये लगाया ऐसे अपने वरिष्ठ कार्यकर्ता स्व. प्रा.यशवंतराव केलकर जी के द्वारा इसी पटना में अभाविप के 30 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में दिया गया भाषण इस पुस्तिका में है, मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इस पुस्तिका को हम बड़ी तन्मयता के साथ पढ़े।

आज का जो विषय है वह है **"आज का छात्र और हमारा कार्य"**, विद्यार्थी परिषद का कार्य। वैसे देखा जाये तो विद्यार्थी परिषद स्वाधीन भारत में स्वाधीन भारत का एक छात्र आंदोलन रहा है। स्वाधीन भारत के छात्र आंदोलन की

अपनी संकल्पना क्या थी ? उसके उपर भी कुछ मिनटों में प्रकाश डालना चाहता हूँ। स्वाधीन भारत के छात्र आंदोलन की अपनी संकल्पना थी और है। हम छात्रों का जन संगठन खड़ा करेंगे, हम कार्यकर्ता आधारित छात्रों का जन संगठन खड़ा करेंगे। we will forum cadre based mass organisation of students. हमारी यह भी एक संकल्पना है कि छात्र यह समाज का एक अंग है, और इसलिये समाज के हित में ही उसका हित समाहित है। देश के लिये मर-मिटने की बात, प्राणों को न्यौछावर करने की बात अगर देशभक्ति का स्वाधीनता के पूर्व के समय में एक परिचायक था तो स्वाधीनता के बाद देश के लिये मर-मिटने की आवश्यकता नही, अपितु देशभक्ति से प्रेरित जीवन स्वयं रोज जीना और स्वयं जीते-जीते दूसरों को भी उस प्रकार का जीवन जीने को प्रेरित करना यह हमारे कार्य की, हमारे आंदोलनो की संकल्पना रही है।

व्यक्ति परिवर्तन से समाज परिवर्तन और समाज परिवर्तन से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, यह हमने हमारे छात्र आंदोलन की संकल्पना की। कुछ मूलभूत बातों का भी हमने विचार किया था, सबसे पहली बात हमने रखी जीवन मूल्यों के प्रति विचार और व्यवहार में साम्य का आग्रह। **कथनी और करनी का अंतर स्वयं मिटायेंगे** इस प्रकार के गीत हम गाया करते हैं। जीवन मूल्यों के प्रति विचार और व्यवहार में साम्य। जीवन मूल्य क्या हैं ?, जीवन का भी मूल्य देकर जिस बात की रक्षा करनी चाहिए, वह है जीवन मूल्य। फिर वह महिला का सम्मान हो, राष्ट्र की एकता हो, राष्ट्र की अखंडता हो या राष्ट्रीय सुरक्षा, विविधता में एकता का भाव हो, सामाजिक समरसता हो। ये हमारे जीवन मूल्य हैं और इसलिये जीवन मूल्यों के प्रति विचार और व्यवहार में साम्य। दूसरी बात सर्वस्पर्शी कार्य -समाज के सभी प्रकार के भेदों से हम दूर रहेंगे। जाति, पंथ, भाषा, धर्म, स्त्री-पुरुष, अगड़ा-पिछड़ा,

अमीर-गरीब, शहरी-देहाती ऐसे भेदों की दीवारें हमारे बीच नहीं होने देंगे। तीसरी बात रचनात्मक दृष्टिकोण से कार्य करना। तो इस प्रकार की भूमिकाओं को लेते हुए विद्यार्थी परिषद ने अपने कार्य की शुरुआत की।

आज जब हम आज के छात्र के बारे में सोचते है तो हमको यह भी देखना पड़ेगा कि छात्र की विशेषता क्या है ? क्या हम आज के परिपेक्ष्य में छात्र का वर्णन कर सकते हैं क्या ? क्या हम छात्र समूह और उनकी गुण -विशेषताओं का वर्णन कर सकते हैं ? अगर हम इस प्रकार से विचार करें तो हमारे ध्यान में आता है कि कुछ बातें ऐसी है कि जो छात्र समूह की, छात्र की परिचायक के नाते कल भी थी, आज भी वह बातें विद्यमान है। जैसे छात्र भविष्य के सपने देखता है, उसको साकार करने के लिये मेहनत करने की उसकी तैयारी है और यह इसलिये भी स्वाभाविक है क्योंकि दुनियाँ में, इस धरती पर आने वाले 50-60-70 साल उसको जीना है और इसलिये भविष्य के सपने देखते हुए उन सपनों को साकार करने की तैयारी, हिम्मत यह छात्र की विशेषता है। युवा अवस्था होने के कारण अंधेरे में कूदने का साहस छात्र रखता है। आह्वानो से डरकर वह भागता नहीं बल्कि उसे स्वीकारता है और उसके साथ दो हाथ करने की, लड़ाई करने की हिम्मत और माद्दा रखता है, इसी विशेष स्वभाव के कारण वह राष्ट्र के लिये स्वयं को भी झोंक देता है। युवा होने के नाते छात्र संगठनक्षम है। आज के छात्रों का समूह यह भारत का एक लघु रुप है। आज भारत में जिस प्रकार की स्थितियाँ हैं वे सभी प्रकार की स्थितियाँ आज छात्रों में दिखने को मिलती हैं। भारत ग्रामीण क्षेत्र में और शहरों में बसा हुआ है। छात्र ग्रामीण क्षेत्र से भी आते है, शहरी क्षेत्र से भी आते है, भारत में जितने पंथ, जाति, भाषा, धर्म, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष ऐसे वर्ग हम देखते हैं वो सभी आज महाविद्यालयीन छात्रों में विद्यमान हैं। इसलिये भारत का छात्र समूह

भारत का ही लघु रूप है। छात्रों का संगठन करना तुलनात्मक आसान है, और सबसे बड़ी बात उसका निहित स्वार्थ न्यूनतम है, और इस कारण बड़े से बड़ी कीमत चुकाने की उसकी तैयारी है। उसकी अंतर्निहीत शक्ति में एक मासूमियत है। बुराई के खिलाफ लड़ना उसकी स्वाभाविकता है। अपने तरूण, उर्जावान अस्तित्व से ही आसपास के लोगों में वह विश्वास बढ़ाता है।

तो यह जो सभी बातें छात्रों के बारे में कही जाती है, उसको कई बार हम लोगों ने अनुभव भी किया है। केवल इसी देश में नहीं दुनिया भर में अनुभव किया है। आज के छात्र का यह वर्णन निश्चित रुप से हम आज के छात्रों के बीच भी अनुभव करते हैं। लेकिन आज के छात्र में ओर भी कुछ नये पहलू जुड़े हैं और जिसका कारण है 1990 के बाद का वैश्वीकरण। वैश्वीकरण के दौर के इस देश में चलने के बाद कुछ बातों में जरुर बदलाव आया उस बदलाव को कई बुद्धिजीवियों ने आमूल-चूल कहा है। परिवर्तन और आमूल-चूल परिवर्तन में अंतर है। परिवर्तन में बातें थोड़ी इधर-उधर हो जाती है, लेकिन जब हम आमूल-चूल परिवर्तन की बात करते हैं तो उसका अर्थ है मूलभूत बदल। संकल्पनाओं में बदल, संदर्भ में ही बदल, मानसिकता में बदल। जिन आधारभूत मूल्यों से, दृष्टि से संबंध प्रस्थापित होते है उसमें ही बदलाव आ जाता है वह है आमूल-चूल परिवर्तन। 1990 के बाद वैश्वीकरण का वातावरण जिस प्रकार से उत्पन्न हुआ है यह वैश्वीकरण का एक पूरा पैकेज है। उसका लाभ हम लेंगे और कमियाँ छोड़ देंगे, ऐसा संभव नहीं होता। यह पैकेज के साथ ही आता है। अतः इसमें कुछ अच्छी बातें भी होगी कुछ बुरी बातें भी होगी। लेकिन इस देश ने जिस समय इस प्रकार की भावना को अंतरभूत किया तो हम वैश्वीकरण के बाद कुछ कमीयाँ कुछ qualities, plus & minus यह भी छात्रों के विश्लेषण करते समय उत्पन्न हुई है उसका भी हमको जिक्र करना पड़ेगा।

वह क्या-क्या बातें है, वह शायद केवल छात्र की नही है, समाज की है। सबसे पहली बात है कि इस भारत भूमि की संस्कृति में सहयोग, साहचर्य ये बुनियादी बात रहती थी उसकी जगह 1990 के बाद Competition (स्पर्धा) ने ले ली।? Competition, Not Co-opration. अब Competition भी क्यूँ? क्योंकि वही फिर से एक बार वैश्वीकरण की बात। Survival of the fittest, जो सबसे सक्षम, ताकतवर है वही स्पर्धा में टिक जायेगा। इस दुनियाँ में वही तय होगा या वही टिक पायेगा जो शक्तिशाली है। थोड़ा बारीकी से अगर हम उसको देखेंगे तो क्या ये सही है? यही अगर बात है, तो क्या हम नहीं कह सकते कि ये जंगल के नियम हैं? तो मनुष्यों के लिये इसका अर्थ क्या है? वास्तव में विचारी, विवेकशील मनुष्यों के समाज में यह बात होनी चाहिए कि सबसे कमजोर की भी रक्षा हो और यह रक्षा समाज के शक्तिशाली लोग करें। यह वास्तव में मानव समाज में बुनियादी बात होनी चाहिए लेकिन वैश्वीकरण के बाद "शक्तिशाली ही जीवित रहेगा" की बात हो गयी, यह भी एक मानसिकता में परिवर्तन आ रहा है। शक्तिशाली ही जीवित रहेगा नहीं शक्तिशाली द्वारा दुर्बल से दुर्बल की रक्षा।

एक समय ऐसा था कि पैसे को बिना देखे ही लोग काम करते थे। **मातृवत् परदारेषु। परद्रव्येषु काष्ठवत्।** इस प्रकार की कहावत संस्कृत में है। "पर दारा" याने दूसरे की स्त्री। उसको माता समान ही देखना। "पर द्रव्य" याने दूसरे का धन। उसको लकड़ी जैसा देखना। लकड़िया पड़ी रहती हैं मैदान में, यहीं तक परद्रव्य कि कीमत है। यहाँ से लेकर पैसा ही सबकुछ है यह विचार परिवर्तन आज समाज में धीरे धीरे हो रहा है। बाजार, व्यापार, मुनाफा, प्रोफीट, अधिकाधिक मुनाफा कमाना सब कुछ विक्रय योग्य है यह सोच आ गयी है। हर एक चीज यहाँ बिकती है, हर एक व्यक्ति पर कीमत का एक टैग है, उसकी कीमत है, उसकी

कीमत चुकाओ और खरीद लो। तो इस माहौल में रहने के कारण कुछ बातों में कुछ विचारों में बदलाव विद्यार्थियों में भी जरुर आया है। आज का छात्र कैरीयरीस्टीक है ऐसा एक विचार हमारे मन में आता है।

स्पर्धा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, निजी महाविद्यालयों में प्रवेश, प्रवेश परीक्षा, सेमेस्टर पेटर्न, निरंतर मूल्यांकन, भविष्य के पाठ्यक्रमों हेतु विभिन्न प्रकार की प्रवेश परीक्षाएँ इस प्रकार के जाल में वह फँसा है। छुट्टी के समय में भी अपने अंदर जो गुण हैं उन गुणों की वृद्धि करने के लिये समय न देते हुए वह अपने पिताजी के मित्र की कंपनी में बिना वेतन काम करने लगाता है। क्योंकि वह काम करने के बाद उसे जो प्रमाणपत्र मिलेगा वो उसके बायोडेटा में आ जायेगा और बायोडेटा में आ जाने के बाद आगे चलकर नौकरी मिलेगी। इसलिये छुट्टी का समय अपने गुण विकास में लगाने की जगह वह उसे अपने पिताजी के मित्र की कंपनी में जाकर एक कागज का टुकड़ा जिसे प्रमाणपत्र कहा जाता है उसे पाने के लिये लगाना यह छात्र ने सोचना शुरु कर दिया। इसलिए छात्रों के पास खाली समय नहीं है। वास्तविक रुप से देखा जाये तो "स्वतंत्रता" और "समय" जिसके पास है वही व्यक्ति विकसित होता है। विकास करने के लिये पूर्व शर्त है आपके पास स्वतंत्रता चाहिए और समय चाहिए। मैं विकसित भी होऊंगा लेकिन इसलिये समय नही दूंगा, चलेगा ? तो आज लगभग छात्र कुछ स्वाधीनता और समय खो रहा है क्या ? वेकेशन बेचेस, क्रेश कोर्सेस बाकी की चीजों के लिये समय नही है ? "परीक्षा में गुण चाहिये।" 75% अंक मिलना मतलब गाली के बराबर। हम किस प्रकार का बदलाव देख रहे है ? तो ऐसी कुछ चीजो का असर आज के छात्रों पर पड़ा है। वैश्वीकरण के कारण कई प्रकार के विषय खुल गये। अतः उसने विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को अलग प्रकार से अनुभव करना शुरु किया। वह आज मॉल में जाता है। अपने लिये

कभी 40 रुपये टिकट लेकर सामान्य सिनेमाघर में जाता था लेकिन आज टिकट 150 रु. की भी क्यों ना हो और रविवार शाम को 250 रु. भी क्यों न हो वह शुल्क देकर वह मल्टीप्लेक्स मॉल में जाता है। तो इस प्रकार की बातें भी उसने कुछ मात्रा में शुरु की हैं, इसलिये हमें लगता है कि कुछ बातों में बदलाव आ रहा है। मैं मुंबई में रहता हूँ, मजाक में हमारे यहाँ लोग कहते हैं एक फ्लैट में दो कमरों में पिताजी-माताजी और बेटा रहता है, पिताजी चैटिंग में मैसेज डालते हैं कि खाना तैयार है आ जाओ, तो बेटा कहता है थोड़ी देर में आ जाऊगां वह भी चैटिंग के द्वारा। चैटिंग पर कई चुटकुले हैं। एक कक्षा में एक छात्र ने चैटिंग में लिखा, मैं कक्षा में होते हुए भी फेसबुक पर हूँ। सामने से तुरंत टीचर ने लिखा मेरा भी ध्यान तुम पर है। उसके लिये "गुगल अंकल" ही सबसे ज्ञानी है। तो यह सब चल रहा है, और इस प्रकार का एक बदलाव हो रहा है। लेकिन इसमें कुछ अच्छी बातें भी उभरकर आ रही हैं। मैं अनुभव कर रहा हूँ समय प्रबंधन के बारे में विद्यार्थी बहुत जागरूक हुआ है। तंत्रज्ञान का उपयोग कर रहा है। हम जब विद्यार्थी थे तब नोटिस बोर्ड पर लिखा हुआ assignment लिखने के लिये हम वहाँ पर बैठकर लिखते थे। पर आज मैं मोबाईल assignment का फोटो निकाल कर आता हूँ, और कहता हूँ assignment मैंने नोट कर लिया है, घर जाकर कम्प्यूटर पर देख लूंगा। अब यह तंत्रज्ञान का उपयोग भी है और समय प्रबंधन भी। समय प्रबंधन उसने सीखा है। आज का छात्र थोडा ज्यादा समीक्षात्मक (critical) भी हुआ है। बुद्धि से अधिक सोचता है। गुणवत्ता के प्रति अधिक सजग है।

सामान्यतः 80% भावना और 20% बुद्धि लगाकर काम लेने वाला कल का छात्र आज शायद 60% भावना और 40% बुद्धि से काम लेता है। इसलिये वह गुणवत्ता की दृष्टि से खराब चीजों को पसंद नहीं करता चाहे पत्रक हो, चाहे

व्यवस्थाएँ हो उसे गुणवत्ता चाहिये। No Non-Sense Approach यह भी आजकल के छात्रों के मन में उत्पन्न हो रहा है। आप फालतू की बात मत करो योग्य समीक्षा करो। हमे क्या करना है वह बताओ। समस्या का समाधान बताओ, वर्णन नहीं।

तो यह कुछ बदलाव आये है। करियर की दौड़ निश्चित रुप से शुरु हुई है लेकिन विद्यार्थी परिषद का ही नही, सामाजिक काम करने वाले अन्य लोगों का भी यही अनुभव रहा है कि छात्रों की बुनियादी गुणविशेष की बातें जो कई वर्षो पहले थी, वह आज भी हैं। शायद एक आवरण उसके उपर आ गया होगा। लेकिन आज भी वह गुणविशेष वही के वहीं हैं। अगर इस प्रकार से आज के छात्र का हम वर्णन करते है तो फिर हमारे सामने प्रश्न उठता है कि हमारा कार्य किस प्रकार से किस दिशा में करना चाहिए ? कैरियर, स्वार्थ, कक्षाएँ यह सब है लेकिन इसके बावजूद अगर हम उसको अभिनव एवं लीक से हटकर सोचना और नई बातों से छात्रों को हम अवगत कराते हैं तो आज भी हजारों छात्र ऐसा करनेवालों के पीछे दौड़ कर आते हैं। विद्यार्थी परिषद में ही ऐसे कई प्रकार के अनुभव हम लेते हैं। कर्नाटक का "सृष्टी" हो या महाराष्ट्र का "डिपेक्स" जैसा कार्यक्रम हो। आज भी छात्रों के दिल को छूते हैं। डिपेक्स, सृष्टी और सृजना जैसे कार्यक्रमों में भाग लेने में विद्यार्थी खुद को गौरवान्वित महसूस करता है। इस साल डिपेक्स में अखिल भारतीय तंत्र शिक्षण परिषद (AICTE) के अध्यक्ष डॉ. मंथा उद्घाटक के रुप में आये थे, उन्होंने कई महत्व की बातें कही, "कोई भी अंक नहीं जुड़ेगे, कोई भी अतिरिक्त लाभ नहीं मिलेगा, डिपेक्स में भाग लेने के बाद जॉब की गारंटी नहीं होगी, लेकिन फिर भी पांच दिन के लिये घर से बाहर हजारों छात्र यहाँ अपना प्रकल्प प्रदर्शित करने के लिये आते हैं।" विद्यार्थी परिषद ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि छात्र को बिलकुल

सही रुप में अगर हम चुनौती देते हैं और उसके मन को वह बात छू जाती है तो वह आज भी निस्वार्थ रुप से विद्यार्थी परिषद के साथ आयेगा। इस दिशा में हमको सोचना पड़ेगा कि और कौन से नये-नये कार्यक्रम हम कर सकते हैं। नये क्षेत्र हम ढूँढ सकते है क्या ? जैसे आज सामान्य रुप से कला, वाणिज्य, विज्ञान, अभियांत्रिकी संकायों में हमारा काम है। क्या हम कुछ और संकायों को भी जोड़ सकते है ? समाजकार्य की शिक्षा (MSW) लेने वाले छात्र, वे व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता हैं हम स्वैच्छिक सामाजिक कार्यकर्ता, तो ये जो सामाजिक कार्य का शिक्षाक्रम पढ़ने वाले छात्र हैं उनके लिये हम कुछ अनोखे कार्यक्रम करें। क्या हम उनको जोड़ सकते है ? पत्रकरिता, प्रबंधन के छात्र के लिए, ऐसे और भी कुछ विभिन्न विद्याशाखाओं के विद्यार्थियों के लिये लीक से हटकर सोचते हुए, सृजनात्मक तथा अभिनव कार्यक्रम करते हुए हम प्रयास करेंगे क्या ? यह हमारे आने वाले दिनों का कार्य होगा। ऐसे कुछ क्षेत्र हें जिनमें शायद हम कम है। आज छात्रों को अगर हम देखेंगे तो प्रत्येक महाविद्यालय में लेखन, कविता, नाटय लिखने वाले छात्र हैं। वे लेखक हैं। वे सृजन करने वाले हैं। उनके मन में सृजनशीलता है, वह लिखते है, भाव-भावनाओं को व्यक्त करते हैं। तो ऐसे विद्यार्थियों के लिये हम कुछ करेंगे क्या ? नाट्य, संगीत, कला जैसे पाठ्यक्रम का इतना बड़ा क्षेत्र है, क्या विभिन्न प्रकार के अभिनव कार्यक्रम शुरू करके आनेवाले समय में हम इन छात्रों को जोड़ सकते है ? दूसरी एक बात है, भौतिक विस्तार। सर्वव्याप्त विद्यार्थी परिषद का काम होने के लिये हमको काम करना पड़ेगा। अ.भा.वि.प. को सर्वव्यापी होना ही चाहिए। 20 लाख की सदस्यता तक हम पहुँचे हैं। देश के कई जिलों में अपना काम है और जहाँ-जहाँ विद्यार्थी परिषद की इकाई, है वहाँ वहाँ राष्ट्रभक्ति का वातावरण है, वहाँ देश की सुरक्षा की गारंटी है और देश के लिये अच्छा काम करने की गारंटी है।

जहाँ-जहाँ हम अनुपस्थित है वहाँ-वहाँ देश टूटने की संभावना है। इसलिये विद्यार्थी परिषद की इकाईयाँ तेज गति से बढ़नी चाहिएँ। हमें विस्तार की आवश्यकता है। सर्वव्यापी, सर्वसमावेशक विस्तार। इस प्रकार की दिशा हम को रखनी होगी। इसलिये प्रत्येक महाविद्यालय, वरिष्ठ, कनिष्ठ विभिन्न विद्याशाखाओं में हमको जाना पड़ेगा। महाविद्यालयो में जाने के बाद वहाँ जो कार्यकर्ता नहीं है वहाँ उसे ढूंढकर दायित्व देना पड़ेगा। अपने राष्ट्रीय महामंत्री जी ने महामंत्री प्रतिवेदन में अपनी कॉलेज इकाई के अध्यक्ष, मंत्रियों की जो हमने बैठक, एक दिवसीय कार्यशाला राष्ट्रीय पदाधिकरीयों-संगठनमंत्रीयों के साथ की, उसका जिक्र किया है। उसका अनुभव भी हम सभी ने लिया होगा। क्या हम मूल इकाई महाविद्यालय शाखाओं मजबूत कर सकते है? महाविद्यालय इकाई के हमारे कार्यकर्ता को हम उर्जा दे सकते हैं क्या? दो दिन की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में मा. रघुनंदनजी यह विषय रख रहे थे। उन्होंने बहुत ही अच्छा शब्द प्रयोग किया - हम संपर्क करते है, छात्रों को जाकर मिलते है लेकिन क्या हम उनसे बौद्धिक स्तर पर जुड़ सकते है? क्योंकि यह बौद्धिक जुड़ाव विचार को जन्म देगा, और जिस उदेश्य से, जिस विचार से हम काम कर रहे हैं वह विचार वहाँ तक पहुँच जायेगा। अन्यथा किसी क्लब और अभाविप में कोई फर्क नहीं रह जायेगा। इसलिये हमको इस बात के लिये भी सर्तक रहना पड़ेगा कि हमारी मूल इकाई-महाविद्यालय इकाई के पदाधिकारियों का बौद्धिक जुड़ाव होना चाहिए तो क्या हम ये कर सकते है? लेकिन अगर बौद्धिक जुड़ाव करना है, तो हमको हमारी क्षमता भी बढ़ानी पड़ेगी। वाचन, अध्ययन बढ़ाना पड़ेगा। नहीं तो हम भी कई बार कहते है, हाँ वह पुस्तिका छपी थी, बांग्लादेश घुसपैठ के fact finding mission की, वही ना?! पीली रंग वाली? यानि हम भी पुस्तिका को उसके मुखपृष्ठ के रंग से पहचानते हैं, हमने भी कभी पढ़ी नही

होगी तो यह नहीं चलेगा। अगर हम अपनी सबसे निचली इकाई के कार्यकर्ताओं के साथ जुड़ना चाहते हैं तो हमें भी तैयारी करने की आवश्यकता है। क्योंकि हमेशा यही बात कही जाती है कि "देग-तेग-फतेह" देग यानी तत्वज्ञान, तेग यानी तलवार, ये दोनो जब मिल जाते है, तब फतेह यानी विजय प्राप्त होती है। हमारी तेग- आंदोलन तो आज बहुत ही तेज है, क्योंकि हमारा विस्तार 20 लाख सदस्य और लगभग 4000 इकाईयों में हमारा काम है। हम काफी ताकतवर हैं हमारी तेग बड़ी है, तलवार धारदार है। देग - तत्वज्ञान जो कि बौद्धिक जुड़ाव है उसमें हम कम हैं। वो हम करेंगे तो देग और तेग मिल जायेगी फिर फतेह को कोई रोक नही सकता।

लेकिन उसके लिए हमें महाविद्यालय परिसरों में जबरदस्त वैचारिक तूफान खड़ा करना पड़ेगा। चर्चा करनी पडेगी, क्यों? क्यों नहीं? कैसे? 60 वर्ष के स्वाधीनता के बाद भी आज भूखमरी क्यों है, क्यों? एक ही भारत माँ के उदर से उत्पन्न हुए हम भाई-बहन है। भारत मेरा देश और सारे भारतीय मेरे बांधव हैं, ऐसा जब मैं कहता हूँ, तो सुदूर वनवासी क्षेत्र में एक घर में मेरा भाई आधे पेट भूखा रह रहा है। क्यों? स्वाधीनता के कितने वर्ष बाद भी यह प्रश्न हमको पूछना पड़ेगा। क्यों आज भी करोड़ों लोग अभाव में जी रहे हैं? गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, मँहगाई, राष्ट्रीय चारित्र्य का अभाव, नैतिक अधःपतन क्यों? उसका उत्तर क्या है? एक जबरदस्त वैचारिक तूफान हमको प्रत्येक महाविद्यालय इकाई में आगे चलकर खड़ा करना पड़ेगा। ये हमें करना ही होगा, क्योंकि केवल वैचारिक चर्चा से समाधान नहीं होगा। वैचारिक चर्चा तो पहला कदम है क्योंकि वैचारिक चर्चा तो बहुत सारे बुद्धिजीवी, विचारक करते है। आप देश भर के प्रसिद्ध ग्रंथालयों में जायेंगे तो विभिन्न समस्याओं के ऊपर उनके समाधान के रिपोर्ट, दस्तावेज एक के ऊपर

एक आपको दिखाई देंगे। लेकिन केवल शुष्क चर्चा से कुछ खास नही होगा, उसके बाद की सक्रियता, आवश्यक है। क्योंकि हम जानते हैं कि प्रार्थना करने वाले होठों की अपेक्षा सहायता करने वाले हाथ अधिक श्रेष्ठ होते हैं। दायरों से बाहर निकलने का आवाहन करना होगा। सक्रियता से समाज से जुड़ने की बात काफी आग्रहपूर्वक, तर्कसंगत और भावनात्मक रूप से छात्रों के बीच रखनी होगी। उदासीनता छोड़कर सक्रियता का आवाहन करना होगा। इसलिए केवल चर्चा से काम नहीं, आगे चलकर सक्रियता से हमको काम करना होगा। लेकिन सक्रियता से काम करने के लिये क्या करना होगा? सक्रियता से काम करना है तो दो चीजों के ग्हज्लू हमको हमारे कार्यकर्ताओं को देने पड़ेंगे, खुद को लेने पड़ेंगे। वह दो चीजे है, "रिश्तो का अहसास और अनुभूति"।

में मुंबई में रहता हूँ, 9.52 की लोकल के लिये जब में मेरे कॉलेज या ऑफिस के लिये निकलता हूँ, 10.30 ऑफिस पहुँचने के लिये जब हम खचाखच भरी लोकल ट्रेन में जाते है, और एक स्टेशन छोड़ने के बाद लोकल रुक जाती है, तो हम लोगों में कॉमेन्ट आना शुरु हो जाती है। कोई तो ट्रेन के नीचे आ गया है। क्या मेरी ही ट्रेन के नीचे मरना था, क्या उसको? अब तो लेट मार्क होगा, पहले भी दो लेट मार्क हुए है। एक सामान्य छुट्टी भी जायेगी। बच्चे भी कहेंगे यार, आज टेस्ट था। इसको मेरे ही ट्रेन के नीचे आकर मरना था क्या? देखिये, आप सोचिए। आदमी कैसे विचार करता है। लेकिन आप थोड़ा आपके मन को कहिए भगवान ना करे लेकिन उसी समय आपके मोबाईल पर SMS आता है कि आपका मित्र, आपका सहपाठी उसी स्टेशन पर ट्रेन के नीचे आ गया है तो दो मिनिट पहले यही सब बातें करनेवाले, क्या उसको मेरे ही समय ट्रेन के नीचे आना था? मेरा समय, मेरा दिन बर्बाद हो गया। ऐसी एक दृष्टि से गाली देने वाला विद्यार्थी-वही व्यक्ति

SMS आते ही अपने दिनभर के काम छोडकर उसको अस्पताल ले जाने के लिये दौड़ेगा। क्यों? - रिश्तों का अहसास। उसके ध्यान में जब आता है कि वो ट्रेन के नीचे आया हुआ कोई मेरा था, मेरा अपना था, मेरा पड़ोसी था, मेरा रिश्तेदार था, मेरा मित्र था, सहकारी था, मेरा कोई था तब आदमी बाकी सब बातों को नहीं देखता, वो वहा दौड़कर जाता है और पूर्ण रुप से उसको सहयोग करता है। तो यह है रिश्तों का अहसास जो हमको क्रियाप्रवण करने में, कार्य प्रवण करने में सहायक सिद्ध होता है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि क्या रिश्तो का अहसास केवल मैं मेरे परिवार के सदस्य, मेरे पड़ोसी, मेरे सहपाठी और अगर मैं नौकरी करता हूँ तो मेरे साथ-साथ नौकरी करने वाले यहाँ तक ही सीमित है, क्या? क्या, कहीं तमिलनाडु के दूर क्षेत्र में रहता नागरिक मेरा भाई नहीं है? उसके साथ मेरा रिश्ता नहीं है? कहीं लद्दाख से आया हुआ कोई विद्यार्थी दिक्कत में है तो क्या वो मेरा रिश्तेदार नही है? इसलिए जब यह रिश्तों का अहसास मेरे मन में होता है, बाकी सब बातें समाप्त हो जाती हैं और आदमी दौड़ सकता है। और इन्ही रिश्तो के साथ सभी प्रकार की समस्या धीरे-धीरे-धीरे ढहना शुरु हो जाती है।

प्रांतवाद, भाषावाद, every problem can be solved। एक बार रिश्ते का एहसास सबको होना आवश्यक है। लेकिन रिश्ते का अहसास फेसबुक पर नही होगा। सायबर जगत से नहीं होगा। कंप्यूटर पर कभी-कभी मेरे बेटें गेम खेलते हैं, और आपको मालूम है कि गेम में बंदूक से वहाँ किसी को मारना होता है। मैंने उसको कहा कि ठीक है आप उसको बंदूक से मारो लेकिन मैं एक काम करता हूँ एक ब्लेड़ या चुभने वाली वस्तु को आपकी अुंगली के उपर दबाऊं तो जिस प्रकार का दर्द होगा, वह दर्द computer पर बुलेट फायर करके वो जो चित्र होता है, उसको घायल करते समय ध्यान में नहीं आता, क्योंकि अनुभूति नहीं है। और इसलिए

अगर अनुभूति लेनी है तो मुझे समाज में जाना पड़ेगा, लोगों के साथ जाना पड़ेगा। अनुभूति लेने के लिये लोगों से मिलना पड़ेगा । महात्मा गांधी जी का उदाहरण इस समय मेरे मन में आ रहा है, जब उन्होंने देश के बारे में काम करना चाहा तब उनके गुरु नामदार गोपालकृष्ण गोखले जी से उन्होंने पूछा कि मैं देश के लिये काम करना चाहता हूँ, मैं कैसे शुरुआत करू? उन्होंने कहा कि पहले एक काम करो, पहले देश घूम कर आओ, देश देखकर आओ फिर अपने आप आपको पता चलेगा कि आपको क्या करना चाहिए। इस घूमने से अनुभूति उत्पन्न होती है। इसलिए रिश्ते का अहसास और अनुभूति यह दो बातें जब हम हमारे कार्यकर्ताओं को बौद्धिक जुड़ाव होने के बाद करा देंगे तो वे कार्य प्रवणता में बदल जायेंगी। और इसलिए हमारे आने वाले समय में ये हम कितना कर पाते है यह भी हमको सोचना होगा। और ये मैं केवल सिद्धांत के स्तर पर नहीं कह रहा यह विद्यार्थी परिषद ने करके दिखाया है। मैंने जिस शब्द का प्रयोग किया "अनुभूति", अखिल भारतीय शिक्षा संस्थानों में काम करने वाले हमारे लोगों ने इसी नाम से एक प्रकल्प बनाया। छात्रों से आवाहन किया कि आप आपकी छुट्टियों के समय समाज में चल रहे विभिन्न सामाजिक प्रकल्पों में जाने के लिये तैयार है क्या? आपको आश्चर्य होगा, कि IISc, IIT,IIM, MSW के छात्रों ने आवेदन किया। अनुभूति के लिए 112 छात्रों ने स्वयं को प्रस्तावित किया। लेकिन अभाविप भी ऐसा कोई साधारण संगठन नही है, हमने कहा नहीं आवेदन किया है तो क्या हुआ? हम आपकी परीक्षा लेगें और कई सारे साक्षात्कार, संवाद, विचार विमर्श के पश्चात हमने 19 छात्रों का चयन किया, वे 19 छात्र प्रत्यक्ष अनुभूति लेने के लिए समाज में गये। उनका नजरिया बदल गया। उन्होंने कहा कि हमें समाज को नजदीक से देखने का मौका मिला जो कि पूरी तरह से एक अलग दुनिया है, जिसके बारे में हमने कभी भी सोचा नहीं था। अब उस

व्यक्ति को कहने की आवश्यकता नही होगी कि तुम समाज के लिये कार्य प्रवृत्त हो जाओ। इसी प्रकार से आज भी अपने इस अधिवेशन के पंडाल में कई कार्यकर्ता ऐसे हैं जो, अनुभूति लेने के बाद सक्रिय हुए।

विदेशों का मोह छोड़ दिया English और science student ने और विद्यार्थी परिषद और देश का काम करने के लिये इसी देश में रहने का निश्चय किया, अनुभूति और रिश्ते का अहसास। अपना ही एक कार्यकर्ता जो बहुत अमीर घर से है उसने छोड़ दिया वातानुकूलित तीसरे दर्जे से सफर करना, आज वह सामान्य डिब्बे में यात्रा करता है। पूछा क्यों तो कहा कि मुझे असली भारत का दर्शन करना है इसलिए मैं यह करता हूँ- अनुभुति, रिश्तों का अहसास। और यह बात मैं यूँ ही नहीं कह रहा हूँ, इस पंडाल में वह कार्यकर्ता विद्यमान है। तो क्या हम इस प्रकार का सघन, गहरा व तीव्र अनुभव हमारे कार्यकर्ताओं को, छात्रों को दे सकते है? क्या हम ऐसे कार्यक्रमों और उपक्रमों का आयोजन कर सकते हैं जो प्रखर राष्ट्रभक्ति, समाज के प्रति संवेदनशीलता का अनुभव दे सकेंगे। इस प्रकार विविध कार्यक्रम हमे करने पडेंगे। लेकिन जब हम इस प्रकार की गतिविधि शुरु करेंगे तो कई प्रकार के नये-नये विचार आयेंगे। छात्र अच्छी-अच्छी कल्पनाओं के साथ आयेंगे उस समय भी हमारी जिम्मेदारी होती है, हम प्रमुख लोगों की, पंडाल में बैठे सभी कार्यकताओं की कि नये प्रयोगों के लिये, विचारों के लिये, उनको समावेशित करने के लिये स्वागतशीलता हमारे यहाँ है, क्या? नहीं तो हमने ही मन में ठान रखी है, नहीं-नहीं ये अभाविप में नहीं चलता। थोड़ा सोचिए उसका मन क्या है, वो क्यों ऐसा करना चाहता है, थोडा सोचिए। उसको करने दीजिए। तो इस प्रकार से स्वागतशीलता आवश्यक होगी, इस स्वागतशीलता के कारण वह विद्यार्थी सक्रिय होगा। लेकिन फिर से उसको ध्यान में आयेगा, अरे यार मुझे तो मेरे जीवन में भी

सफल होना है, तो कभी-कभी भौतिक जीवन की सफलता का संकट उसको चुप भी करा सकता है। एकदम साल भर सक्रिय रहने के बाद वह यह भी कह सकता है, नहीं यार में अभी जरा पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। अभी मैं विस्तारक के नाते नहीं आऊंगा। अभाविप में कम आऊंगा ऐसा वह कह सकता है। उतार-चढ़ाव होते हैं लेकिन उतार-चढ़ाव में भी उसके साथ रहकर, उसके साथ बात करते हुए हम उसे आगे ले जा सकते हैं क्या ? इस स्थिति से बाहर आओ करो, यह काम करने लायक है। माँ के लिये पुत्र नही करेगा तो और कौन करेगा। चलो-चलते चलो। इस प्रकार से कहते हुए भी जब वो फिर से एक बार व्यावसायिक नजरियें मे जाकर सामाजिक काम के लिये समय देना छोड़ देगा उस समय भी हमें red pencil approach लेकर उसे काटना नहीं चाहिए। क्या इतना किया ? छह महीने आ गया, काम भी बंद कर दिया। अभी फोन भी नहीं उठाता है। ठीक है, उसके पास जाईये, उससे बात कीजिए। एक बार जो अभाविप कार्यकर्ता बना हमेशा कार्यकर्ता रहेगा। छोड़ना नही है। तो इस प्रकार से हम हमारे आाने वाले समय में स्वागतशीलता का अनुभव और स्वागतशीलता का एक भाव, गुणवत्ता हम सभी के बीच में उत्पन्न कर सकते है क्या ? ये भी हमारे देखने लायक चीज है। एक और शब्द का प्रयोग मैं आपके सम्मुख करुंगा। एक बार राष्ट्रीय कार्यकारी बैठक में सुनील जी ने उसका उल्लेख किया था कि अगर हम ये सभी बातें करेंगे तो हम सर्वसमावेशक नेतृत्व विकसित कर सकते हैं। (Inclusive Leadership)

आज हमारा नेतृत्व है, हमारा झंडा है, हमारे नारे है, हमारे गाने है, हमारे विचार है। वो विचार तो रहेंगे ही लेकिन थोड़ा ईधर-उधर नये प्रकार का विचार करने वाला अगर है, तो इसके साथ भी जाना है। और आप जब जायेंगे तो आपका झंडा भी जाता है, चिंता मत करो। और इसलिए सर्व समावेशक नेतृत्व के बारे में

हम सोच सकते हैं क्या ? क्या हम समर्थन कर सकते है ? क्या हम समावेशित कर सकते है ? यह समावेश करने की मानसिकता क्या हम विकसित कर सकते हैं क्या ? ये सब करना है तो हम ही कार्यकर्ताओं को और हमारी शाखा को और एक बात सोचनी होगी। वह है एक साथ अनेक कार्य करने की क्षमता। नही तो आज अपना चल रहा है, एक प्रयास और एक ही परिणाम।

अधिवेशन आया तो एक महीना पहले ही काम बंद। बड़ा कार्यक्रम है, बाकी कुछ नही। कुछ समस्या आ गयी, अरे जरा जाओ 2-3 लोग देखो, झंडा ले जाओ, आंदोलन करना पड़ेगा। खबर (अखबार या चैनल पर) आ गई तो बस हो गया। अपना अभी मुख्य काम है अधिवेशन। अधिवेशन सही है, अधिवेशन तो ठीक करना ही है लेकिन अब ऐसा नही चलेगा। अब एक समय एक ही काम करना पर्याप्त नहीं होगा अपितु एक साथ कई बातें करनी पडेंगी। एक साथ अनेकों कार्य करना यहीं समय की माँग है। लेकिन एक समय पर अनेक काम जब मैं कहता हूँ तो में दो अर्थ में कहता हूँ। पहला; व्यक्ति को अलग-अलग प्रकार के काम एक समय में करने की क्षमता बढ़ानी होगी। दूसरा; आपके पास पच्चीस कार्यकर्ताओं का एक ही ग्रुप जून से लेकर मई माह की छुट्टियों तक अपनी इकाई चलाने के लिये नहीं है, क्या ? कोई बात नहीं। क्या हम उन कार्यकर्ताओं का वर्गीकरण कर सकते हैं ? चलो जून-जुलाई में ये पंद्रह लोग काम करेंगे, जुलाई-अगस्त दूसरा ग्रुप आयेगा। मैं जब विद्यार्थी था तब हमारे समय कहते थे कि यह अक्तूबर बैच का कार्यकर्ता है। अक्तूबर में परीक्षा दी, बाकी आगे के छह महीने को खाली समय रहता था। तो इस प्रकार से समयानुसार हम एक साथ पर अनेक कार्य कर सकते हैं। हमारी इकाई ओर कार्यकर्ताओं में एक समय पर अनेक कार्य करने की क्षमता (बहुकार्यक्षम) होना यही समय की माँग है।

ये सब करते समय हमको भोलेपन से दूर रहना पड़ेगा। दुर्भाग्य से देश में ऐसे कई संगठन है, जो प्रमाणिकता, और लोकतंत्र का नकाब पहन कर छात्रों को हिंसात्मक, गैर-लोकतांत्रिक, विकास विरोधी राह पर ले आते हैं। ऐसे संगठनों से सावधान नहीं, उनसे दो हाथ करके, उनका नकाब उतार कर छात्रों को स्पष्ट रुप से यह कहना पड़ेगा कि, यही उनका असली चरित्र है। वह कॅम्पस फ्रंट ऑफ इंडिया हो या कोई और दूसरा संगठन। ऐसे सभी संगठनों से छात्रशक्ति को हमको बचाना होगा। छात्रशक्ति गलत हाथों में नहीं जानी चाहिए। छात्रशक्ति को दिशा देनी होगी देश के रचनात्मक कामों के लिये, तो इसको भी हमको ध्यान में रखना होगा । यह सब करते-करते आनेवाले समय में हम सामाजिक उत्पन्न कर सकते है, क्या ? क्योंकि कई बार दुर्भाग्य से लीडरशीप नेतृत्व कहते ही मन में आता है, पार्षद, विधायक, सांसद। इसमें कोई संदेह नहीं कि लोकतंत्र में वे नेता हैं। उनकी एक सीमित भूमिका भी है। अच्छी भूमिका उन्हें निभानी है। अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो हम उनका विरोध करेंगे क्योंकि दलगत राजनीति से उपर उठकर काम करने की कसम हमने खायी है। हम नेतृत्व को सामाजिक नेतृत्व में परिवर्तित कर देंगे। आप में से जो कार्यकर्ता विद्यार्थी परिषद के विगत तीन-चार अधिवेशनो में आये होंगे, उनके लिए सामाजिक नेतृत्व यह कोई नया शब्द नहीं है। विद्यार्थी परिषद के अधिवेशनो में जिन-जिन युवाओं को आज तक युवा पुरस्कार दिया गया है वे आदर्श हैं, वे सामाजिक नेता है। उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में जो काम किया है, वह सामाजिक नेतृत्व का ही काम है। मनन चतुर्वेदी हो या ऐसे कई उदाहरण हम सब लोग देख सकते है। उनसे प्रेरणा लेते हुए उसी प्रकार से विचार करते हुए हम सामाजिक नेतृत्व उत्पन्न कर सकते हैं, क्या ? तो हमारे कार्य की दिशा में यह सब बातें हमको आनी चाहिए। क्योंकि कई बार मन में आता है कि अखिर में संगठन किसके लिये ? हम क्यों संगठन चला रहे है ? जिसका मैंने शुरु में जिक्र किया कि

यह क्लब नहीं है। और कहीं अपना टाइम व्यतीत नही होता इसलिए टाईम पास है, अच्छे लोग है, इसलिए यहाँ आकर कुछ क्रियाविधि करेंगे बाकी अपने-अपने जीवन में चले जायेंगे। यह इतना छिछला काम नहीं। गहरा है। अगर संगठन गरीब, दलित, पिछड़े, शोषित, ग्रामीण ऐसे हमारे भाई-बहनों के लिये कोई काम नहीं कर सकता संघर्ष नही कर सकता तो ये सब क्यों करना ? इसलिए ऐसे सभी वर्गो के छात्रों को और समाज के तत्वों को हमको यह आश्वस्त करना होगा कि अभाविप आपके साथ है आज, कल और हमेशा रहेगी।

इस प्रकार से विद्यार्थी परिषद के संगठन को आने वाले दिनों में हमको चलाना होगा। अंतिम कुछ समय में आपको जैसे मैंने कहा कि उसके कुछ उदाहरण आये हैं, महामंत्री जी के प्रतिवेदन में भी आया है, शिक्षा के व्यापारीकरण के खिलाफ महामंत्री जी ने कहा गत साल 30 लाख छात्र विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में सड़कों पर आये। मैं यह सारी बात रख रहा हूँ तो क्या यह उसका प्रगटीकरण नही है ?

ईशान्य भारत के विद्यार्थी जब पूर्वांचल में उनको जाना पड़ा, किसी कारणवश, अराष्ट्रीय ताकतों की धमकियों के कारण, तो क्या सारे समाज के छात्र स्टेशन पर नही खड़े हुए ? और उनको नही कहा ? चिंता मत करो, मत जाओ हम आपके साथ हैं। वापस आ जाओ, उन्होंने भी कहा हम आश्वस्त हुए, लेकिन अभिभावकों ने बुलाया है, वो चिंतित हैं, जाकर आयेंगे, पाँच दिन में आयेंगे यह भी उन्होंने कहा। उस समय भी ये ध्यान में आ गया this is manifestation. मुझे याद है कि विद्यार्थी परिषद ने कुछ वर्षो पूर्व कई प्रांतो में योजना करते हुए शैक्षिक मुद्दों पर बड़े-बड़े आंदोलन किये, महाराष्ट्र में एक लाख तीस हजार विद्यार्थियों का मोर्चा रहा हो, कर्नाटक में हो या और भी कई प्रांतों ने किया। मुझे लगता है कि यह सब जो हमने

किया वह मात्र उस छात्र के हित के लिये नही था। आगे चलकर हमने घुसपैठीयों का विषय लिया, बांग्लादेशी घुसपैठीयों के खिलाफ समाज में कोई भी जागृति नहीं थी, ऐसे समय सर्वेक्षण व कई प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से दिसंबर 2008 में चिकन-नेक पर चालीस हजार छात्र खुद की जेब के पैसे लगाकर ढूँढो, मिटाओ, भगाओ (Detect, Delete & Deport) का नारा देते हुए जा पहुँचे। वो छात्र क्या खुद की समस्या के लिये पहुँचे ? नहीं वो देश की समस्याओं के लिये पहुँचे। तो यह विद्यार्थी परिषद ने करके दिखाया है। मुझे लगता है कि इस प्रकार की क्रियाशीलता विद्यार्थी परिषद छात्रों में उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा है। मुझे लगता है, कि उसके कुछ अंश हम देख रहे है। छात्र आगे आ रहा है, चाहे वो दिल्ली की घटना हो, चाहे कुछ भी हो, छात्र प्रश्न उठा रहा है। प्रश्न पूछ रहा है। मुझे लगता है, कि इस प्रक्रिया को और प्रखर करते हुए ओर अच्छी तरह से गहराई से सोचते समझते हुए अगर हम चलायेंगे तो हमारे कार्य का जो वास्तविक उदे्श्य है वो पूर्ण होगा। आज जो सायबर मीडिया, सामाजिक मीडिया ऊभरकर आया है, विद्यार्थी परिषद ऐसा पहला संगठन है जो इस मीडिया में भी पूर्ण रुप से सक्रिय है। हम ई बैठक करते हैं हमारा ABVP Voice है, हमारा official Website है। हम Facebook पर भी सक्रिय है। Twitter पर भी हम अपनी बात रखते है। विद्यार्थी परिषद ने cyber activism को भी अपनाया है। इसीका नतीजा है, जब बांग्लादेशी घुसपैठीयों के बारे में जो विडीयो हमने अपलोड किया कुछ ही दिनों मे 1,10,000 hits आज के समय में उस पर आ गये हैं। नहीं तो, आपको मालूम है कि यू-ट्यूब पर आप कुछ भी टाइप करो तो किस प्रकार के विडियो आते हैं। लेकिन ऐसे समय में 1,10,000 छात्रों ने ऐसे विडीयो को hit किया, वे पूर्वोत्तर के छात्रों की समस्याओं और देश की एकता से जुड़े। तो मुझे लगता है कि cyber activisam जरूरी है। शब्द शायद गलत होगा लेकिन cyber कार्यकर्ता अपने यहाँ विभाग नहीं है, सब काम सभी ने

करने चाहिएँ। लेकिन कुछ की ज्यादा रुचि और कुशलता होती है, इसलिए इस शब्द का उपयोग मैं कर रहा हूँ, इसकी भी हमको आवश्यकता पड़ेगी। मुझे लगता है कि इस प्रकार बदलते हुए छात्रों की गुणवत्ता और गुणधर्मो को देखते हुए, लेकिन जो मूल बातें हमने हमारे संगठन में कही थी उसको Reinstate करने के लिये, फिर से एक बार प्रखरता से चलाने के लिये मुझे लगता है की आने वाले समय में इसी दिशा में अगर हम जायेंगे तो हम अपना कार्य और सक्षम, और ताकतवर कर पायेंगे। और फिर कोई भी दुष्ट शक्ति नही होगी, जो इस देश को तोड़ने की हिम्मत कर सकेगी। मुझे यह आत्मविश्वास है कि सत्र के शुरु में जो गीत हमने सुना था, **मातृभूमि का समर्पित दीप मैं - चाह मेरी यह कि मैं जलता रहूँ... जलता रहूँ...** लेकिन यह तब होना है यह मुझे मेरे व्यक्तिगत स्तर पर तय करना पडेगा कि मैं जलता रहूँगा। चाह मेरी है कि मातृ भूमि के लिये मैं जलता रहूँगा, इस प्रकार से जलने की क्षमता और ईच्छा ईश्वर आप सभी कार्यकर्ताओं को प्रदान करें इतना कहते हुए मैं अपनी बात को विराम देता हूँ। धन्यवाद।

उपरोक्त भाषण अभाविप के 58 वें राष्ट्रीय अधिवेशन, (26 से 28 दिसम्बर 2012, पटना) में अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. मिलिंद मराठे द्वारा दिया गया।